International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 01-02

छत्तीसगढ़ की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी

[1] डॉ0 संध्या जायसवाल, [2] संजू खटकर

[1] विभागाध्यक्ष राजनीति विभाग, डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड़ कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।
[2] एम. फिल. राजनीति विज्ञान, डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड़ कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
छत्तीसगढ़. की महिलाओं का राजनीति में भागीदारी भारतीय राजनीति में महिला जहा तक राजनीति में महिलाओं की सहभागिता का प्रश्न हैं, तो वर्तमान में केवल विकसित देशों में बल्कि विकासशील देशों में एवं राज्यों में भी इनकी स्थिति दयनीय है। भारत की या छ. ग. की राजनीति हो वर्शों से पुरूष ही राज करते आये हैं। हांलाकि भारत उन देशों में से एक है जिसने दषको पहले ही देश हर स्तर पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम रहा है देश की नीतियों और महत्वपूर्ण फैसले लेने की बात आती है तो महिलाओं की भूमिका नही के बराबर रहती है।

मूल शब्द: भारतीय राजनीति, महिलाओं, छत्तीसगढ़।

प्रस्तावना
यदि हम भारत जैसे विकासशील देश की बात करे और देश की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीति. स्थिति की बात करे तो भारत की महिला की भूमिका देखने को ही नही मिलती है क्योकि भारतीय महिलाओं की सोच विकसित नही होने के कारण स्वयं की इच्छा
शक्ति राजनीति के प्रति जागरूक नही महिलाएं राजनीति को एक दलदल समझती है और उस दलदल पर आना नही चाहती है।
महिलाएं चाहे तो सारी जिम्मेदारी का निर्वहन अपने देश के प्रति निभा, सकती है। महिलाएं शारीरिक एवं मानसिक रूप से सफल होती है परन्तु वे समाज सेवा मे रूचि नही रखती यदि महिला सार्वजनिक राजनैतिक कार्य मे रूचि ले तो जमीनी स्तर पर राजनीति सुधर जाये क्योकि किसी गलत कार्य को रोकने हेतु उस गलत कार्य को खुद करके उसे आगे अच्छा (सही) बनाया जा सकता है । जिस तरह सुश्री मायावती जी ने किया राजनीति मे आकर दलितो का उद्धार किया।
सभी बाते इच्छा शक्ति मे निहित होती है तभी तो आज तक भारत में केवल एक ही महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल और प्रधानमंत्री श्रीमती इन्द्रा गांधी बन पायी है। बहुत सारी समस्याएँ आती है पर समस्या से दूर भागना विकल्प नही होता उसका सामना करना ही असली इन्सानियत है।
डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने कहा है– अपने एक वोट एक अधिकार का महत्व समझे उस सत्ता को प्राप्त करने की कोशिश करे। जिस सत्ता पर बैठ कर नियम बनाये जाते है। अन्यथा महिला की भूमिका राजनीति में देखने को नही मिलेगा सर्व प्रथम शिक्षित हो महिला को शिक्षित करना समाज एवं परिवार का प्रथम कर्तव्य है।

अध्ययन का उद्देश्य
राजनीति में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को लेकर दो बाते सामने आती है– क्या ? उन्हें प्र्याप्त प्रतिनिधि मिलना चाहिए (जरूर मिलना चाहिए क्योकि नारी बाढ़ से हो वंश की उत्पत्ति हो सकती है एवं यदि वे आगे जायेगी तो समाज आगे जायेगा) और मिलना चाहिए तो क्यो? (महिला को इसलिए प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए क्यो नारी किसी भी रूप से कमजोर नही होती जितना पुरूष का गुण होता है। उतना नारी की भी होती है सभी कार्य हेतु नारी सक्षम होती है) ।
क्या उन्हें राजनीति में प्र्याप्त प्रतिनिधि की आवश्यकता नही है ? (नारी जिन्हें हर रूप में समाज ने नकारा है। उन्हें अपने स्तर को ऊंचा उठाने हेतु एवं सर्वत्र नारी विकास हेतु उनका राजनीति मे स्थान होना ही चाहि।) आवश्यक है तो क्यों ? (क्योकि नारी ही से समाज की उत्पत्ति होती है नारी का भी उतना महत्व है। जितना पुरूष) इसलिए आवश्यक है।

इस संदर्भ मे वर्तमान मे सुधारवादी तथा रूढ़ीवादी दो विचार है
1) सुधारवादी विचार : इन विचारों के लोग महिलाओं को अन्य क्षेत्रों के साथ – साथ राजनीति मे भी महत्व देने के पक्ष में है। वही दूसरी ओर

2) रूढ़ीवादी विचारधारा : महिलाओं को राजनीति के क्षेत्र में देखकर अनेक मनगढ़त कहानी गढ़ लेते है। समाजिक बुराई बढ़ने का कारण मानना या घर परिवार की स्थिति बिगड़ती दिखती है।
इन सभी बुराईयों को समाप्त करने हेतु महिलाओं के द्वारा स्वयं ही राजनीति मे आकर सत्ता प्राप्त कर समाज को यह दिखा देने हेतु कि महिला किसी भी रूप से कमजोर नही एवं पर्याप्त राजनीति मे अपने सम्पूर्ण योगदान देने मे समर्थ है।

महिलाओं की सक्रिय राजनीति मे ना आने के कारण
1) पारिवारिक स्थिति
महिलाएँ अपने घर परिवार की ज्यादा जिम्मेदारियों के निर्वहन मे ध्यान देती है एवं उनकी अपनी सोच की परिवार को खुश रखेंगे तो सब को खुशी होगी एवं अपने पारिवारिक स्थिति में कमजोरी नही लाना चाहती। जिसके कारण राजनीति महिलाओ को नही भाती है।

2) अशिक्षा
ज्यादातर महिलाएँ शिक्षा से वंचित है जिसके कारण समाजिक जागरूकता नही होने के कारण कही जाते या किसी से बात करने मे संकोच महसूस करती है।

3) आर्थिक कमजोरी

महिलाएँ शिक्षित ना होने के कारण उसके साथ – साथ आर्थिक रूप से भी कमजोर होती है। क्यों राजनीति मे आने हेतु सर्व प्रथम (रूपयों) की आवश्यकता होती है और महिला तो ऐसे ही उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती है।

4) पुरूष प्रधान राजनीति

यदि हम अपने भारत की बात करे या भारत के राज्यों की पुरूष प्रधान तो है ही साथ ही राजनीति भी पुरूष प्रधान हो गई है। राजनीति में पुरूषों का अधिक वर्चस्व होने के कारण महिलाएं अपना स्थान बनाने मे असमर्थ हो जाती है।

5) शोषण

राजनीति के क्षेत्र मे महिला का पूर्णतः मानसिक एवं शारीरिक शोषण होने के कारण भी महिलाओं के मन में डर सा स्थिति बना हुआ है । जिससे भी वह राजनीति मे नही आना चाहती।

महिलाओं की सक्रिय राजनीति मे आने के उपाय

समाज मे ऐसा क्या किया जाये जिससे महिलाएँ राजनीति में आने के लिए तत्पर हो।

इनके निम्न उपाय ह

1. महिला शिक्षा को बढ़ावा देना ।
2. राजनीति मे आने हेतु स्नातक की शिक्षा अनिवार्य किया जाना चाहिए।
3. महिलाओं को जमीनी स्तर पर राजनीतिक प्रशिक्षण दी जाये। जिससे वह राजनीति के बारे में जान पाये।
4. सार्वजनिक स्थानों पर उनकी उपस्थिति अनिवार्य की जाये जैसे :– ग्राम सभा आदि।
5. राजनीति में महिला का भी वही स्थान हो जो पुरूष का होता है। जैसे :– यदि एक पुरूष चुनाव लड़ता है तो उनके घर आने का समय तय नही होता किन्तु महिला का समय तय होता है इसमे सुधार होना चाहिए।

इसी तरह इन सभी परेशानियों को लड़ते हुये हमारे भारत एवं छ.ग. की महिलाएँ जो राजनीति में आई ह

भारतीय

1. भारतीय प्रथम महिला कांग्रेस अध्यक्ष – डॉ. एनी बेसेन्ट
2. प्रथम महिला राष्ट्रपति – श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल
3. प्रथम महिला प्रधानमंत्री – श्रीमती स्व. इन्द्रिरा गांधी
4. प्रथम महिला राज्यपाल – सरोजनी नायडू (उ. प्र.)
5. वर्तमान महिला उपराज्यपाल – किरण बेदी (पाडुचेरी)
6. लोकसभा अध्यक्ष – श्रीमती मीरा कुमार / सुमित्रा महाजन

छत्तीसगढ़

1. प्रथम महिला सांसद – स्वं मीनी माता
2. महिला एवं बाल विकास विभाग मंत्री – श्रीमती रमशीला साहू
3. संसद सदस्य छ. ग. लोकसभा – श्रीमती कमला देवी पावले
4. छ. ग. विधानसभा सदस्य रायपुर – श्रीमती चम्पा देवी पावले
5. विधान सभा सदस्य रायपुर – श्रीमती सुनीती सत्यानंद राबिया
6. विधान सभा सदस्य रायपुर – केराबाई मनहर –
7. विधायक कोटा – रेणु जोगी
8. प्रथम महिला महापौर बिलासपुर – श्रीमती वाणी राव

''अध्ययन की उपयोगिता''

प्रस्तुत शोध में पंचायतों में महिलाओ को राजनीति सहभागिता (भूमिका) का अध्ययन करने हेतु उनकी उपयोगिता भी एवं महिलाएं अपने कर्तव्य अधिकारों के प्रति जागरूक है या नही यदि है तो उसका उपयोग अपनी निजी जीवन पर करती है या नही यदि नही तो क्या कारण है ? (कारण को जानकर उसका समाधान हेतु इन विशयों के सुधार हेतु यदि हमारे शोध के माध्यम से समाज की महिला की स्थिति राजनीति में वह अपनी भूमिका (कर्त्तव्य) कैसे निभा पायेंगें एवं उनकी समाजिक चेतना जागृत करना।

उन्हें सार्वजनिक जगहों पर अपने आप की प्रस्तुति देने पूर्ण स्वतंत्रता का प्रयोग करना एवं अपने जीवन का सर्वागीण विकास कर सके और भविष्य में आने वाली नारी पीढ़ी में महिला की राजनीति में एक अच्छी मजबूती बन सके। समय में महिलाओं का कल्याण हो सके जिस तरह सत्ता में जाकर श्रीमती स्वं इन्द्रिरा गांधी जी ने महिलाओं के विकास हेतु कई तरह के योजना लागू किये।

जैसे

1. नारी शक्ति पर जोर
2. नारी उत्पीड़न की समाप्ति
3. महिलाओं के आरंक्षण के लिए प्रयास

इस तरह से सभी नारी जाति को जागृत करने हेतु कदम उठाये गये। तभी महिलाएं राजनीति में आयें।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध प्रबंध छ. ग. की राजनीति में महिलाओं की भूमिका '' समस्याओं का एक राजनीतिक अध्ययन (बिलासपुर संभाग विकासखण्ड़ तखतपुर) के विशेष संदर्भ में छ.ग. में प्राचीन एवं मध्यकालिन व आधुनिक युग में महिलाओं की राजनीति में दयनीय एवं अच्छी स्थिति दोनो की व्याख्या इस शोध ग्रंथ द्धारा की जा रही हैं। जिसके माध्यम से भावी पीढ़ी हेतु सकारात्मक जो प्रयास किये गये निश्कर्शतः हम कह सकते है कि छ. ग. राजनीति में महिलाओं की भूमिका रही है।

संसद या विधानसभा में महिलाओं की भूमिका का प्रश्न है तो हम कह सकते है कि संसद एवं विधानसभा, ग्राम पंचायत मे उनकी संख्यात्मक दृष्टि से उपस्थिति संतोशप्रद हो सकती है। छ. ग. मे श्रीमती करूणा शुक्ला प्रारंभ से ही राजनीति में सक्रिय रही है। इसी तरह ग्राम पंचायतों में महिला सरपंच होती हैं – स्व सहायता समूह भी हैं, महिला समूह हैं जो समाज को अपना समय देश एवं राज्य की महिला हेतु प्रेरणा स्त्रोत है। डॉ0 अम्बेडकर – सत्ता वह चाबी है जिससे सभी ताले खोलें जा सकते है।

संदर्भ सूची

1. मैग्जीन 2013
2. अखबार दैनिक भारत
3. छ.ग. अखबार जनता चैनल
4. ळववहसम छ. ग. निर्वाचन आयोग
5. छ. ग. संदर्भ 2005
6. छ. ग. विधानसभा एक दृश्टि में 2005